अध्याय -05

प्राथमिक क्रियाएँ

पाठ की रूपरेखा

1. आर्थिक क्रिया
2. प्राथमिक क्रिया की विशेषताएँ
3. आखेट एवं भोजन संग्रहण
4. पशुचारण या पशुपालन
5. चलवासी पशुचारण एवं वाणिज्यिक पशुचारण में अंतर
6. कृषि
7. कृषि का सामान्य विभाजन
8. निर्वाह कृषि
9. आदिकालीन निर्वाह कृषि
10. गहन निर्वाह कृषि
11. चावल प्रधान गहन निर्वाह कृषि
12. चावल रहित गहन निर्वाह कृषि
13. रोपण कृषि
14. विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि
15. मिश्रित कृषि
16. डेयरी कृषि
17. भूमध्यसागरीय कृषि
18. सब्जी एवं उद्यान कृषि
19. संगठन के आधार पर
20. सहकारी कृषि
21. सामूहिक कृषि
22. खनन

© JCERT not to be republished

1 आर्थिक क्रिया :-

मानव के वे क्रियाकलाप जिनसे प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से आय प्राप्त होती है, आर्थिक क्रिया कहलाती है।

कार्य की प्रकृति के आधार पर आर्थिक क्रियाकलापों को मुख्यतः 4 वर्गों में बाँटा गया है - प्राथमिक क्रिया, द्वितीयक क्रिया, तृतीयक क्रिया एवं चतुर्थक क्रिया।

1.1 आर्थिक क्रिया के प्रकार :-

1.1.1 प्राथमिक क्रिया

1.1.2 द्वितीयक क्रिया

1.1.3 तृतीयक क्रिया

1.1.4 चतुर्थक क्रिया।

2. प्राथमिक क्रिया की विशेषताएँ :-

2.1 इसके अंतर्गत आखेट एवं भोजन संग्रहण, पशु चारण या पशुपालन, कृषि वानिकी, खनन, मत्स्यपालन आदि कार्य सम्मिलित हैं।

2.2 प्राथमिक क्रियाएँ प्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण पर निर्भर होती है।

3.3 मानव प्रकृतिप्रदत संसाधनों (मृदा, जल, वनस्पति, खनिज इत्यादि) का प्रत्यक्ष उपयोग एवं उपभोग करता है।

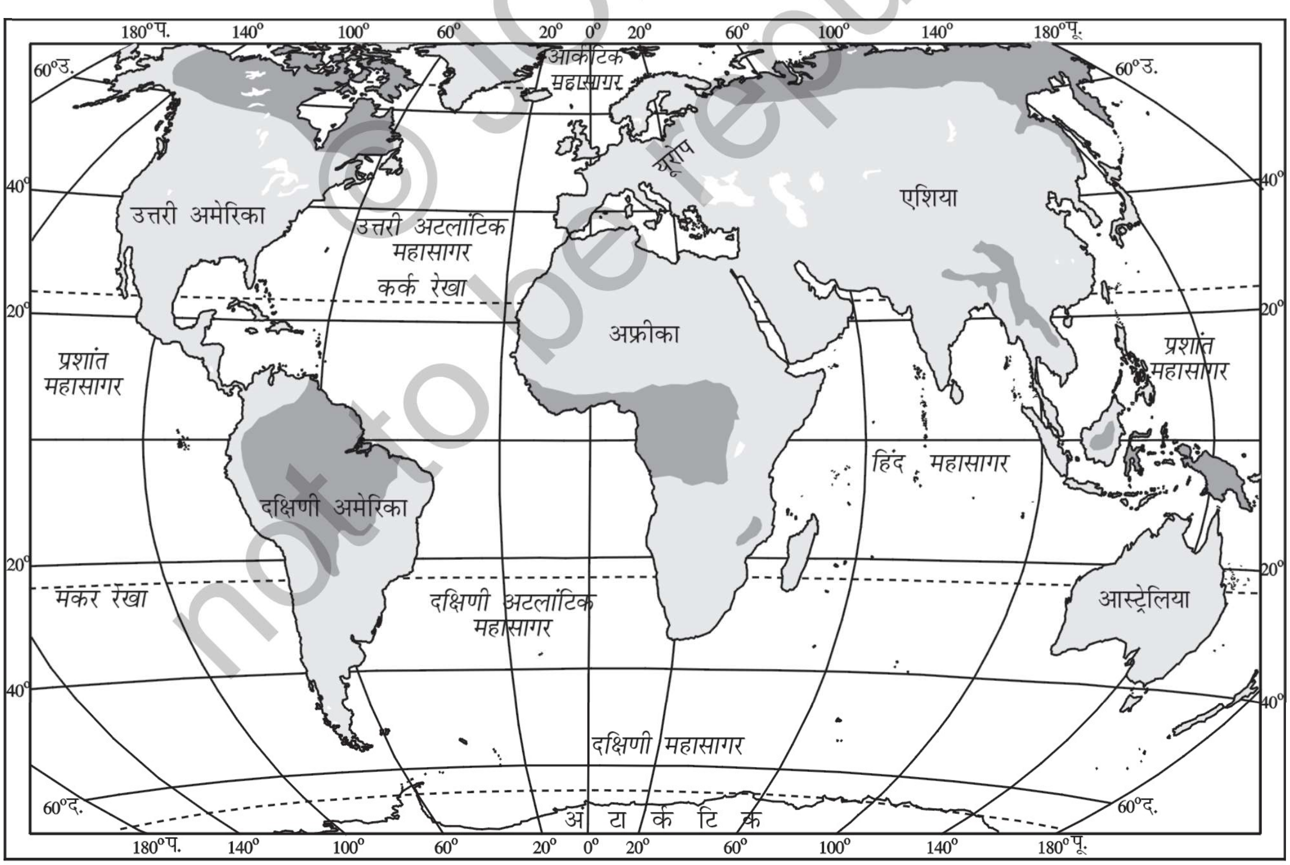

निर्वाहन संग्रहण

© NCERT not to be republished

3.4 कार्य की प्रकृति श्रमप्रधान एवं कार्यक्षेत्र घर के बाहर होने के कारण इन्हें लाल कॉलर श्रमिक (रेड कॉलर जॉब) भी कहते हैं।

3. आखेट एवं भोजन संग्रहण :-

3.1 आखेट एवं भोजन संग्रहण मानव की सबसे प्राचीनतम आर्थिक क्रिया है। आखेट का अर्थ होता है - पशुओं का शिकार करना।

3.2 सभ्यता के आरंभिक दौर में आदिकालीन मानव जीवन - निर्वाह के लिए पशुओं का शिकार कर एवं जंगलों से कंद, मूल, फल का संग्रह कर भोजन, आवास एवं वस्त्र की पूर्ति किया करता था।

3.2 प्रमुख क्षेत्र:- उत्तरी कनाडा, उत्तरी यूरेशिया, दक्षिणी चिली, अमेजन बेसिन, पूर्वी व मध्य अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण-पूर्व एशिया इत्यादि।

4. पशुचारण या पशुपालन :-

4.1 मानव आखेट की निर्भरता को कम करने के लिए विभिन्न प्रकार के पशुओं को पालतू बनाना प्रारंभ किया।

© JCERT not to be republished

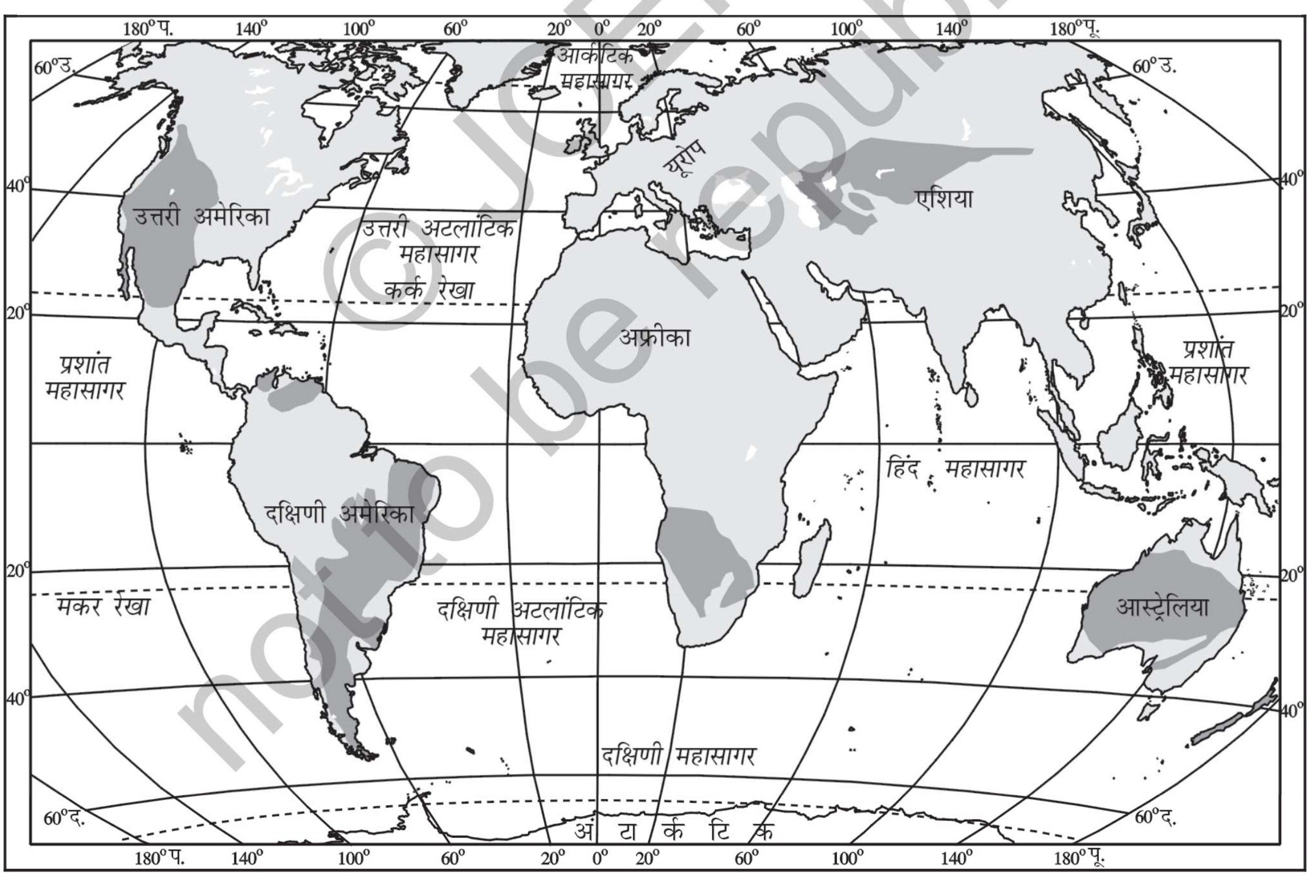

वाणिज्य पशुधन पालन

4.2 वर्तमान समय में पशुचारण या पशुपालन को व्यवसाय के रूप में किया जाने लगा है।

पशुचारण को मुख्यतः दो वर्गों में विभाजित किया गया है -1. चलवासी पशुचारण 2. वाणिज्यिक पशुचारण।

4.3 चलवासी पशुचारण :-

4.3.1 चलवासी पशुचारण में पशुपालक समुदाय चारे एवं जल की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं।

4.3.2. यह जीवन निर्वाह प्रकार की कृषि है। इसमें पशुओं पर पूर्णतः निर्भरता रहती है। पशुओं का उपयोग भोजन, वस्त्र, आवास तथा परिवहन के रूप में करते हैं।

4.3.3 विश्व के विभिन्न जलवायु दशाओं में विभिन्न प्रकार के पशुओं को पालने की प्रधानता है। पाले जाने वाले पशुओं में गाय, बैल, बकरी, घोड़ा, गधा, रेनडियर तथा लामा प्रमुख हैं।

© JCERT not to be republished

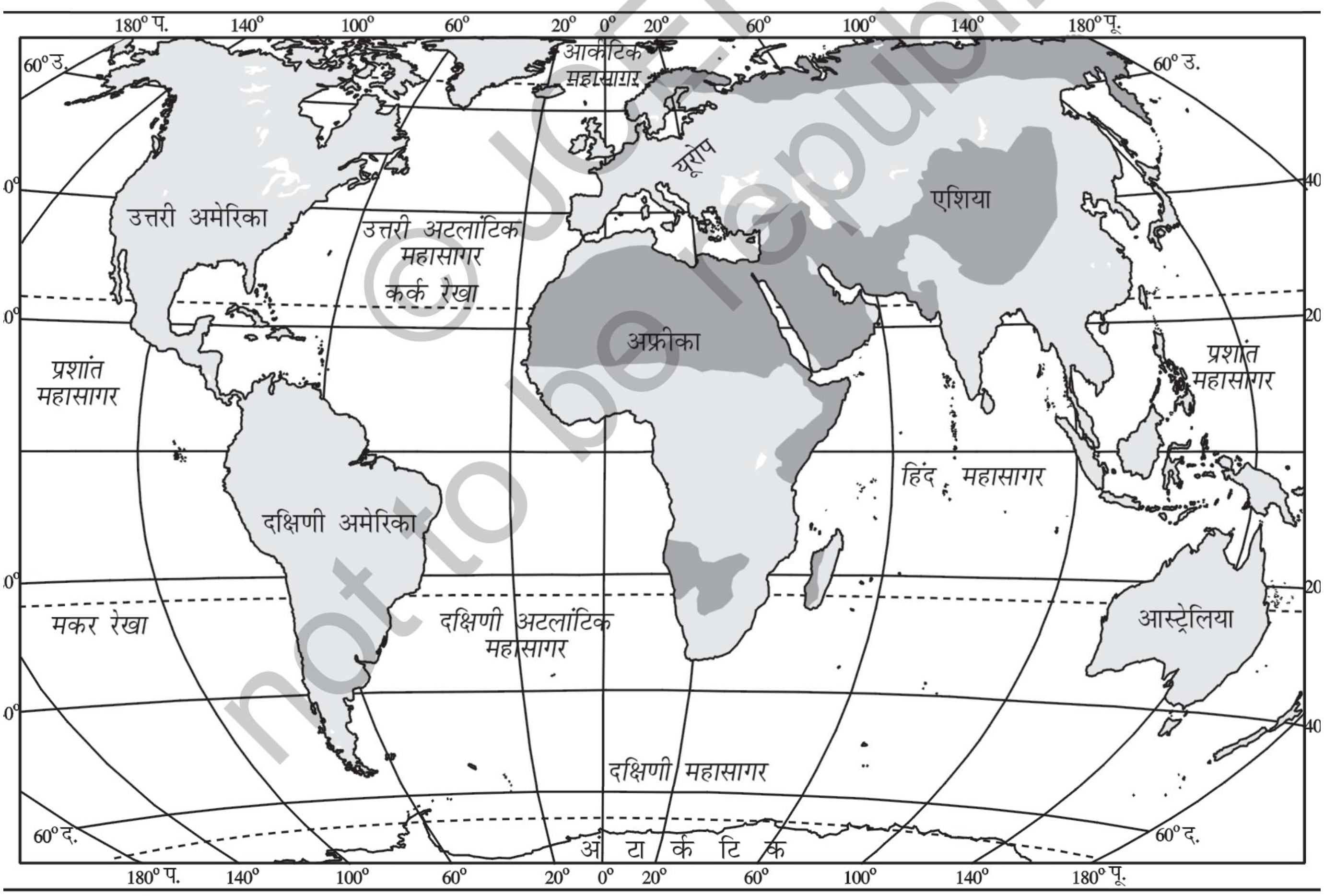

चलवासी पशुचारण

4.4 वाणिज्यिक पशुचारण :-

4.4.1 वाणिज्यिक पशुचारण व्यापारिक प्रकार की कृषि है। इसका विकास आधुनिक काल में हुआ है। यहाँ पशुओं का उपयोग दूध, माँस, चमड़ी के लिए किया जाता है।

4.4.2 पशुओं को निश्चित स्थानों पर बाड़ो (फॉर्म हाउस) में पाला जाता है ।

4.4.3 वाणिज्यिक पशुचारण का ज्यादातर विकास विकसित देशों में हुआ है।

5. चलवासी पशुचारण एवं वाणिज्यिक पशुचारण में अंतर:-

5.1 अंतर का आधार

5.1.1 प्रकृति

5.1.2 जीवन पद्धति

5.1.3 प्रमुख क्षेत्र

5.1.4 देखभाल

5.1.5 चारे की व्यवस्था

5.1.6 पशुओं की व्यवस्था

5.2 चलवासी पशुचारण

5.2.1 चलवासी पशुपालक चारा तथा जल की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं।

5.2.2 चलवासी पशुपालन एक जीवन निर्वाह पद्धति है, जिसमें स्थानीय खपत के लिए भोजन, वस्त्र, आवास तथा जीवन के अन्य सुविधाएँ जुटाई जाती है।

5.2.3 चलवासी पशुचारण पुरानी दुनिया तक ही सीमित है ।इसके मुख्य क्षेत्र सहारा, पूर्वी अफ्रीका का तटीय भाग, दक्षिण-पश्चिम एवं मध्य एशिया, यूरेशिया में टुंड्रा प्रदेश तथा दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका एवं मेडागास्कर का पश्चिमी भाग है।

5.2.4 पशु प्राकृतिक रूप में बड़े होते हैं और उनकी विशेष देखभाल नहीं की जाती है।

5.2.5 चलवासी पशुचारण में पशुओं के चारे की फसल नहीं उगाई जाती है। पशुओं को पूर्णता प्राकृतिक रूप से उगने वाली घास पर ही निर्भर रहना पड़ता है।

5.2.6 चलवासी पशुपालक एक ही समय में विभिन्न प्रकार के पशुओं को रखते हैं।

5.3 वाणिज्यिक पशुचारण

5.3.1 वाणिज्यिक पशुपालन मुख्यतः नई दुनिया में ज्यादा प्रचलित है। इसके प्रमुख क्षेत्र उत्तरी अमेरिका के प्रेयरी, मध्य अमेरिका के लॉनोज, दक्षिण

© JCERT not to be republished

अमेरिका के पम्पास, दक्षिण अफ्रीका के वेल्ड, ऑस्ट्रेलिया के डाउन्स तथा न्यूजीलैंड के केंटरवरी के घास स्थल है।

5.3.2 वाणिज्यिक पशुचारण एक निश्चित स्थान पर बाड़ों (फार्म हाउस) में किया जाता है तथा उनके चारे की व्यवस्था स्थानीय रूप से की जाती है।

5.3.3 वाणिज्यिक पशुपालन में दूध, माँस, चमड़ा आदि का उत्पादन होता है, जिसका अन्य क्षेत्रों के साथ व्यापार किया जाता है।

5.3.4 पशुओं को वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार पाला जाता है और उनकी विशेष देखभाल की जाती है।

5.3.5 वाणिज्यिक पशुचारण में प्राकृतिक घास की कमी होने की अवस्था में चारे की फसल उगाकर उसकी पूर्ति की जाती है।

5.3.6 वाणिज्यिक पशुपालक उसी विशेष पशु को पालता है, जिसके लिए वह क्षेत्र अत्यधिक अनुकूल होता है।

6. कृषि :-

6.1 मानव की प्राथमिक क्रियाओं में सबसे अधिक महत्वपूर्ण कृषि है। विश्व की लगभग आधी जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। भारत जैसे विकासशील देशों में लगभग 70% जनसंख्या का मुख्य व्यवसाय कृषि ही है।

6.2 कृषि ही मानव जीवन को भोजन तथा अन्य वस्तुएँ उपलब्ध कराती है।

6.3 कृषि को सामान्य विभाजन के आधार पर मुख्यतः 7 प्रकारों में तथा संगठन के आधार पर मुख्यतः 2 प्रकारों में विभाजित किया गया है।

7. कृषि का सामान्य विभाजन :-

7.1 कृषि को सामान्य विभाजन के आधार पर मुख्यतः निर्वाह कृषि,रोपण कृषि, विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि, मिश्रित कृषि, डेयरी कृषि, भूमध्यसागरीय कृषि, सब्जी,फल, पुष्प कृषि में विभाजित किया गया है।

8. निर्वाह कृषि :-

8.1 मानव सिर्फ जीवन निर्वाह करने के लिए इस प्रकार की कृषि करता है। इससे सिर्फ इनकी उदरपूर्ति पूर्ण होती है।

8.2 निर्वाह कृषि मुख्यतः दो प्रकार की होती है- आदिकालीन निर्वाह कृषि एवं गहन निर्वाह कृषि।

© JCERT not to be republished

9. आदिकालीन निर्वाह कृषि :-

9.1 यह आदिम प्रकार की कृषि है। यह कृषि मानव द्वारा उदरपूर्ति के लिए अन्न उगाने के प्रथम प्रयास का प्रतीक है ।

9.2 कृषक खेत की उर्वरा शक्ति में ह्रास के फलस्वरूप क्षेत्र में क्रमशः बदलाव कर कृषि करते हैं, इसे ही स्थानांतरित कृषि कहा जाता है ।

9.3 कृषक वन के छोटे-छोटे पेड़ों तथा झाड़ियों को काटकर, उसे जलाने तथा उस पर कृषि करने के कारण उसे कर्तन एवं दहन (slash and Burn) कृषि भी कहा जाता है।

9.4 कृषक 10-15 वर्षों के बाद पुनः उसी खेत को साफ करके उस पर चक्रीय रूप में कृषि करने के कारण इसे झाड़ी-पड़त (Bush Fallow) कृषि भी कहते हैं।

9.5 स्थानांतरित कृषि के प्रमुख क्षेत्र- मध्य अफ्रिका, दक्षिण पूर्व एशिया, उत्तरपूर्वी भारत, मध्य व दक्षिण अमेरिका आदि उष्णकटिबंधीय क्षेत्र।

9.6 स्थानांतरित कृषि को विभिन्न देशों में विभिन्न स्थानीय नामों से जाना जाता है, इसे निम्नलिखित तालिका से समझा जा सकता है-

6.1 देश का नाम

6.1.1 इंडोनेशिया मलेशिया

6.1.2 मध्य अमेरिका और मेक्सिको

6.1.3 वियतनाम

6.1.4 वेनेजुएला

6.1.5 ब्राजील

6.1.6 जायरे, मध्य अफ्रीका

6.1.7 फिलीपींस

6.1.8 उत्तर पूर्वी भारत

6.2 स्थानांतरित कृषि का नाम

6.2.1 लदांग

6.2.2 मिल्पा

6.2.3 रे

6.2.4 कोनुको

6.2.5 रोका

6.2.6 मसोलो

6.2.7 चेनगिन

6.2.8 झूमिंग

© JCERT not to be republished

10. गहन निर्वाह कृषि :-

10.1 यह कृषि मुख्यतः एशिया के घनी जनसंख्या वाले देशो में की जाती है। इसमें चीन, भारत, पाकिस्तान, बंग्लादेश, जापान, तथा दक्षिण- पूर्वी एशियाई देश सम्मिलित हैं ।

10.2 गहन निर्वाह कृषि मुख्यतः दो प्रकार की होती है - 1 चावल प्रधान गहन निर्वाह कृषि 2 चावल रहित गहन निर्वाह कृषि।

11. चावल प्रधान गहन निर्वाह कृषि:-

11.1 इसमें चावल सबसे महत्वपूर्ण फसल है।

11.2 यह कृषि एशिया के उन क्षेत्रों में की जाती है, जहाँ पर्याप्त वर्षा होती है।

11.3 उच्च जनसंख्या घनत्व के कारण खेतों का आकार छोटा, भूमि का गहन उपयोग, मशीनों का प्रयोग बहुत कम किया जाता है।

11.4 कृषि का समस्त कार्य कृषक तथा उसके परिवार के सदस्य करते हैं ।

12. चावल रहित गहन निर्वाह कृषि:-

12.1 इस कृषि में चावल मुख्य फसल नहीं होती है, इसके स्थान पर गेहूं, जौ, सोयाबीन आदि फसलें बोई जाती है।

12.2 यह कृषि उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ पर चावल की फसल के लिए पर्याप्त वर्षा नही होती है ।

12.3 इस प्रकार की कृषि मुख्यतः उत्तरी चीन, उत्तर पश्चिमी भारत, उत्तरी कोरिया एवं उत्तरी जापान में की जाती है ।

13 . रोपण कृषि :-

13.1 यह एक व्यापारिक कृषि है, जिसके अंतर्गत प्रमुख फसलें चावल, कहवा, कोको, रबर कपास, गन्ना व केला जैसी फसलें उगाई जाती है ।

13.2 इस कृषि में बागानों का आकार बहुत बड़ा होता है।

13.3 इसमें अधिक पूंजी निवेश, उच्च प्रबंधन तथा तकनीकी एवं वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाता है ।

13.4 इसका विस्तार यूरोपीय एवं अमेरिकी द्वारा उष्णकटिबंधीय उपनिवेशों में स्थापित किया था।

13.5 ब्राजील में कॉफी के बागानों को 'फेजेंडा' कहते है ।

© JCERT not to be republished

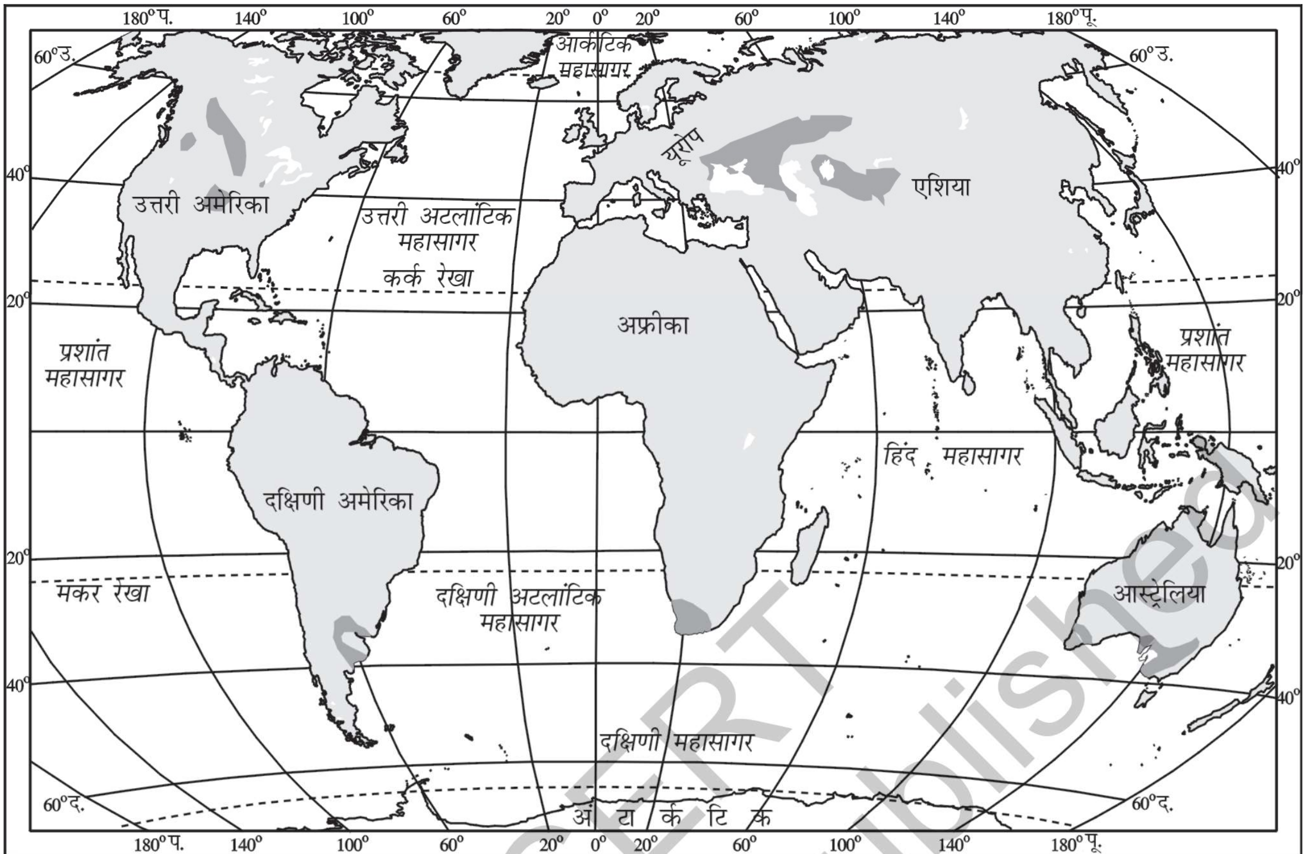

विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि

© JCERT not to be republished

14. विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि :-

14.1 इस प्रकार की कृषि में खेतो का आकार बड़ा होता है एवं कृषि अत्याधुनिक वैज्ञानिक तरीके से की जाती है।

14.2 इस कृषि का मुख्य फसल गेहूं है, यद्यपि मक्का, जौ, राई जैसी अन्य फसलें भी बोई जाती है।

14.3 यह कृषि मुख्यतः मध्य अक्षांशो के आंतरिक अर्ध-शुष्क प्रदेशों में की जाती है। कृषि के प्रमुख क्षेत्र यूरेशिया के स्टेपीज, उत्तरी अमेरिका के प्रेयरी, अर्जेंटीना के पम्पास दक्षिण अफ्रीका के वेल्ड, आस्ट्रेलिया के डाउंस एवं न्यूजीलैंड के केंटरबरी में किया जाता है।

15. मिश्रित कृषि :-

15.1 मिश्रित कृषि में फसलो एवं पशुओं को समान महत्व दिया जाता है इसमें बोई जाने वाली प्रमुख फसलों में गेहूं जौ राई जई मक्का एवं चारे की फसल महत्वपूर्ण हैं फसलों के साथ प्रमुख पशुओं में भेड, बकरी, सूअर, तथा कुक्कूर महत्वपूर्ण है।

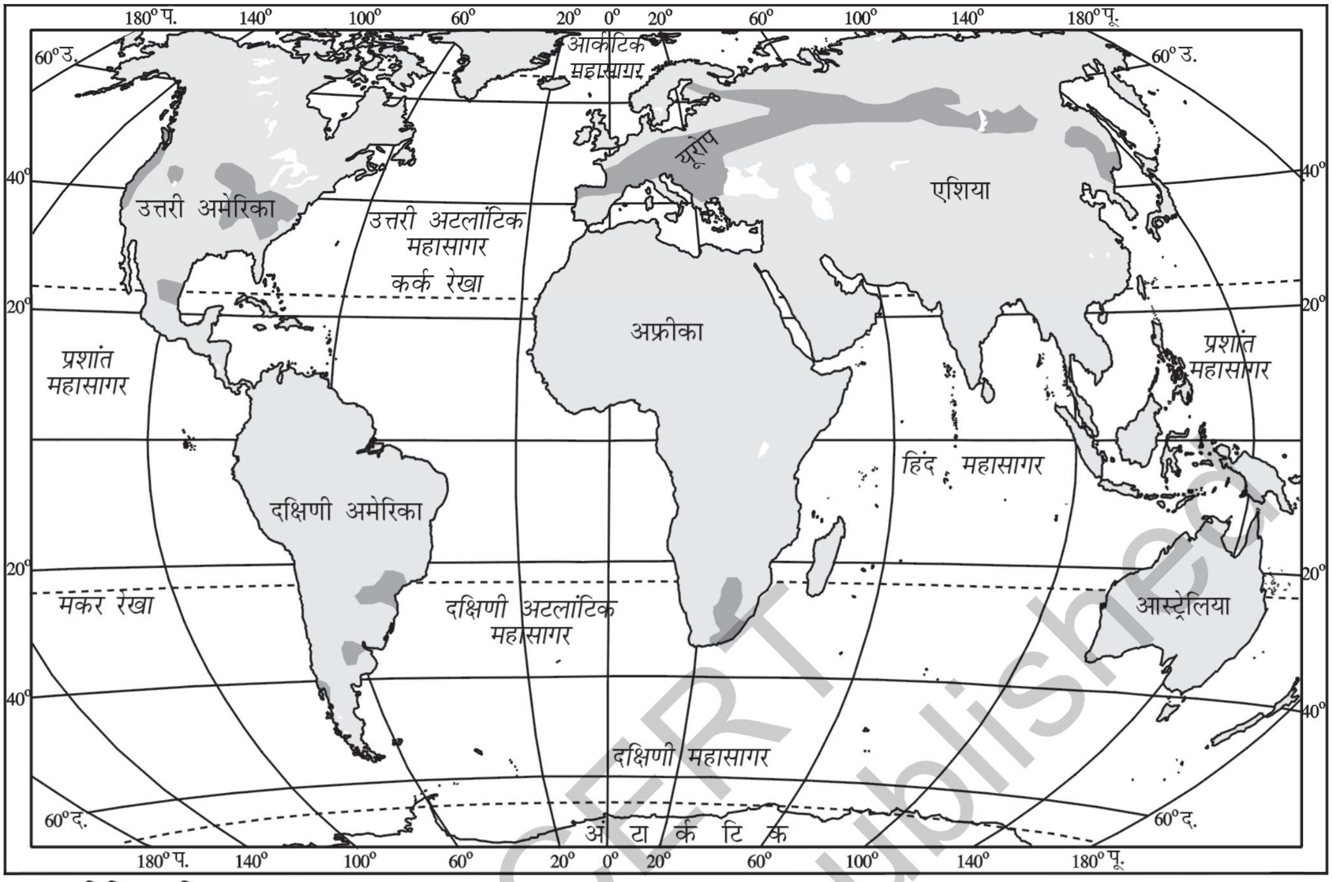

मिश्रित कृषि

15.2 शुष्क प्रदेशो में जहाँ वर्षा कम होती है जिसके कारण फसल उत्पादन में कमी के कारण पशुपालन पर विशेष बल दिया जाता है।

15.3 इस कृषि का विकास विश्व के अत्यधिक विकसित भागों में हुई है उदाहरण स्वरुप उत्तर पश्चिम यूरोप उतरी अमेरिका का पूर्वी भाग यूरेशिया का कुछ भाग एवं दक्षिणी महाद्वीपों के समशीतोष्ण अक्षांश वाले भागों में इसका विस्तार है।

16. डेयरी कृषि :-

16.1 यह एक विशेष प्रकार की उन्नत कृषि है, जिसमे दुधारू पशुओं को पाला जाता है।

16.2 डेयरी कृषि में अधिक पूंजी एवं विशेष प्रबंधन पर बल दिया जाता है।

16.3 पशुओं को देख-रेख पूरी साल करनी पड़ती है फलस्वरूप वर्ष में कोइ अन्तराल नही होता।

16.4 विकसित यातायात, प्रशीतकों (रेफ्रिजरेटर) पश्चुरीकरण की सुविधा

© JCERT not to be republished

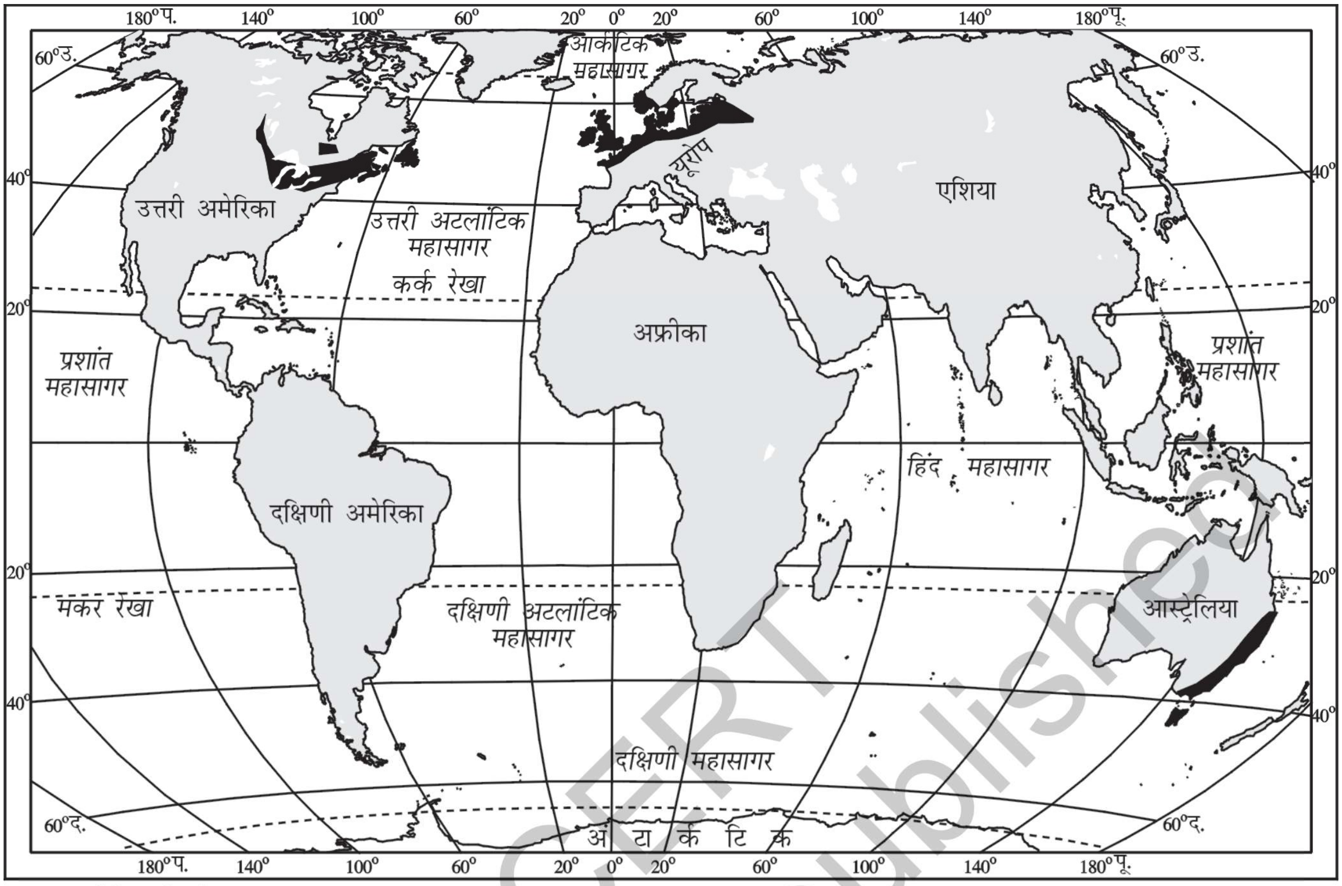

डेरी कृषि क्षेत्र

के कारण डेयरी उत्पादों को अधिक समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है तथा विश्व के दूसरे भागों में भी भेजा जा सकता है।

16.5 यह मुख्यतः नगरों एवं औद्योगिक केन्द्रों के इर्द - गिर्द की जाति है क्योंकि इन क्षेत्रों में दूध तथा दुग्ध उत्पादों के लिए उचित बाजार उपलब्ध होता है।

16.6 इस कृषि का विकास मुख्यतः उतर पश्चिम यूरोप कनाडा न्यूजीलैंड दक्षिणीपूर्वी आस्ट्रेलिया एवं तस्मानिया में हुआ है।

17. भूमध्यसागरीय कृषि :-

17.1 यह कृषि खट्टे फलों के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। महत्वपूर्ण खट्टे फलों में अंगूर, मुनक्का किशमिश अंजीर जैतून आदि है।

17.2 इस प्रकार की कृषि का विकास ज्यादातर भूमध्यसागर के समीपवर्ती क्षेत्रों दक्षिणी कैलिफोर्निया मध्यवर्ती चिली दक्षिणी पश्चिमी भाग ऑस्ट्रेलिया के दक्षिण या दक्षिणी पश्चिमी भाग में हुआ है।

© JCERT not to be republished

18. सब्जी एवं उद्यान कृषि :-

18.1 यह एक विशिष्ट प्रकार की कृषि है जिसमें अधिक मुद्रा मिलने वाली फसलों की कृषि की जाती है, इसमें मुख्यतः सब्जी, फल एवं पुष्प की कृषि की जाती है।

18.2 इसकी मांग नगरीय क्षेत्रों में अधिक होती है जहाँ पर इन वस्तुओं को बेचकर धन कमाया जाता है।

18.3 नीदरलैंड पुष्प उत्पादन में विशिष्ट स्थान रखता है। यहाँ एक विशेष प्रकार की ट्यूलिप पुष्प की खेती की जाती है।

18.4 जिन प्रदेशो में कृषक केवल सब्जियाँ पैदा करते हैं वहाँ इसे ट्रक कृषि के नाम से जाना जाता है क्योंकि ट्रक द्वारा फार्म एवं बाजार की मध्य की दूरी रातभर में तय करता है।

19. संगठन के आधार पर :-

19.1 संगठन के आधार पर कृषि को मुख्यतः दो प्रकारों में विभाजित किया गया है-

1. सहकारी कृषि और
2. सामूहिक कृषि।

19.2 यह वर्गीकरण कृषक का खेतों पर अपना अधिकार तथा सरकारी नीतियों से प्रभावित होता है।

20. सहकारी कृषि :-

20.1 यह ऐसी कृषि है जिसमे दो या दो से अधिक कृषक स्वेच्छा से मिलकर सहकारी संस्था या समिति के माध्यम से कृषि कार्य करते हैं

20.2 सहकारी संस्था कृषकों को सभी प्रकार के आवश्यक मदद करते हैं।

20.3 सहकारी कृषि का विकास पश्चिमी यूरोप के देशों डेनमार्क नीदरलैंड बेल्जियम स्वीडन एवं ईटली जैसे देशों में हुआ। इनमे से सर्वाधिक विकास डेनमार्क में हुआ जहाँ प्रत्येक कृषक सहकारी संस्था का सदस्य है।

21. सामूहिक कृषि :-

21.1 सामूहिक कृषि का उद्देश्य कृषि के दोषों को दूर करना, कृषि की उपज को बढ़ाना एवं कृषक के शोषण को समाप्त करना है।

21.2 सामूहिक कृषि में उत्पादन के साधनों का मालिक सम्पूर्ण समाज होता है तथा यह सामूहिक श्रम पर आधारित होता है।

© JCERT not to be republished

21.3 कृषक अपने संसाधनों (भूमि, पशुधन व अन्य संसाधन) को मिलकर कृषि कार्य संपन्न किया जा जाता है।

21.4 यह कृषि साम्यवादी क्रांति की देन है। कृषि उत्पादन का वार्षिक लक्ष्य सरकार तय करती है तथा उत्पादन सरकार ही निर्धारित लक्ष्य पर खरीदती है।

21.5 यदि लक्ष्य से अधिक कृषि उत्पादन होता है तो किसानो में समानुपात में वितरित कर दिए जाते हैं।

21.6 इस कृषि का विकास प्रारंभ में सोवियत संघ में हुआ। बाद में इस कृषि पद्दति को हंगरी रोमानिया पोलैंड बुल्गारिया आदि देशो ने अपनाया।

21.7 सामूहिक कृषि को सोवियत संघ में कोलखोज के नाम से जाना जाता है।

22. खनन :-

22.1 यह प्राचीनतम व्यवसाय है। भूपर्पटी से मूल्यवान धात्विक और अधात्विक खनिजों को निकालने की प्रक्रिया को खनन कहते हैं। यह मुख्यतः झारखण्ड, छत्तीसगढ़, ओड़िसा, मध्यप्रदेश तथा कुछ अन्य खनिज संपन्न राज्यों में किया जाता है।

22.2 खनन की मुख्यतः दो विधियाँ है:-
1. धरातलीय खनन विधि और
2. भूमिगत खनन विधि।

22.2.1. धरातलीय खनन विधि:-इसे 'विवृत खनन' (विस्तृत खनन) भी कहते हैं। यह खनन भूतल के निकट कम गहराई पर अपेक्षाकृत आसान, सुरक्षित और सस्ता होता है। इस खनन में सुरक्षात्मक उपायों एवं उपकरणों पर अतिरिक्त खर्च अपेक्षाकृत कम होता है।

22.2.2. भूमिगत खनन विधि :-

इसे 'कुपकी खनन' भी कहा जाता है। यह खनन अधिक गहराई में जोखिमपूर्ण तथा असुरक्षित होता है। इस खनन में सुरक्षात्मक उपायों व उपकरणों पर अत्यधिक खर्च होता है।

© JCERT not to be republished